International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-04-2019; Accepted: 30-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 56-58

बैरोजगारी समस्या के विरूद्ध आवाज उठाता नाटक : 'नयी सभ्यता : नये नमूने'

डॉ0 प्रतिभा सिंह[1], ओमप्रकाश गोलिया[2]
[1] शोध निदेशक, शा. मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोधार्थी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

बैरोजगारी हमारे देश की एक जटिल समस्या बनकर उभरी है। आज हर पल देश की आबादी में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। प्रत्येक वर्ष 1.30 करोड़ युवा श्रमशक्ति का हिस्सा बनते जा रहे हैं वह अपने पसंदीदा नौंकरी और काम–काज से वंचित है। यही कारण है कि बैरोजगारी कि समस्यां ने वर्तमान समय में एक भयानक रूप धारण किया है। युवा ऊर्जा एवं उमंग से भरपूर होते हैं। किशोरावस्था के बाद हर–एक नौंजवान के मन में कुछ करने की इच्छा रहती है। जिससे वह अपने परिवार की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं को पूरा कर सकें, लेकिन उसे सही रोजगार न मिले तो वह कुंठा ग्रस्त हो जाता है तथा पैंसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनता है। इसी बैरोजगारी की समस्या को डॉ. शंकर शेष ने 'नयी सभ्यता : नये नमूने' नाटक में कृष्ण के माध्यम से व्यक्त कर, बैरोजगारी की समस्या के विरूद्ध आवाज उठाई है।

डॉ. शंकर शेष स्वातंत्रोत्तर युग के हिन्दी के एक श्रेष्ठ नाटककार हैं। शोषित वर्ग की पीड़ा को नाटकों में उभारकर उसका समाधान करना, डॉ. शंकर शेष के नाटकों की विशेषता है। अपने युग के सक्रिय रंगकर्मी एवं कुशल रंगान्वेषकों में, डॉ. शंकर शेष का नाम महत्वपूर्ण है वे अपने युग के स्रष्टा और द्रष्टा रचनाकारों में गिने जाते हैं। डॉ. शंकर शेष का नाट्य साहित्य समकालीन स्थितियों का यथार्थ चित्रण है। शोषित पीड़ित जनजीवन की सहज सरल अभिव्यक्ति से डॉ. शंकर शेष का नाट्य साहित्य भरा पड़ा है। साहित्य की महानता जीवन की सहजता को प्रकट करने में सक्षम है। डॉ. शंकर शेष के नाट्य साहित्य में व्यापक सामाजिक सरोकार की भावना निहित है। डॉ. शंकर शेष का नाट्य साहित्य मानवता के यथार्थ को वर्णित करता है। डॉ. शंकर के नाटकों में प्रगतिशील विचारधारा प्रवाहित है

डॉ. शंकर शेष के नाटक इस बात का चित्रण करते हैं कि आजादी के बाद भारतीय समाज में अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है एवं लचर अर्थतंत्र ने कई सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न किया है, जिससे स्वतंत्रोत्तर भारतीय सामाजिक व्यक्तियों का जटिल स्वरूप सामने आया है। इन समस्याओं में सबसे जटिल समस्या है बैरोजगारी।

'नयी सभ्यता : नये नमूने' नाटक का मुख्य पात्र कृष्ण, एक मध्यमवर्गीय परिवार से है। कृष्ण के पिता नौंकरी करते थे, लेकिन उन्हें झूठे आरोप में फंसा दिया गया, उनकी नौंकरी चली गई। इस परिस्थिति के बाद कृष्ण की माँ ने घर की जिम्मेदारी संभाली तथा दिन–रात मेहनत करके, कष्ट उठाके कृष्ण को पढ़ाया। कुछ समय बाद कृष्ण की माँ बीमार हो गई और कृष्ण के सुखी परिवार के इंतजार में माँ ने संसार छोड़ दिया तथा समय के अन्तराल में कृष्ण की बहन शोभा भी टी.बी. रोग से ग्रस्त हो गई। अब घर की जिम्मेदारी कृष्ण के हाथ में आ गई। इस दायित्व में कृष्ण को घर चलाने के साथ–साथ बहन शोभा का इलाज भी कराना था। कृष्ण ने ईमानदारी के साथ अपने दायित्व को निभाने की कोशिश की, लेकिन काफी मेहनत करने के बाद भी उसे नौकरी हाथ न लग सकी। कृष्ण प्रथम श्रेणी में ग्रेजुएट है। वह योग्यवान है, लेकिन उसके प्रयासों के बाद भी उसे नौकरी न मिल सकी। नौकरी न मिलने की पीड़ा को स्वयं कृष्ण व्यक्त करता है–

''.....मैंने ग्रेजूएट किया वोभी फर्स्ट क्लास में, क्या फायदा हुआ? किसी ने नौंकरी न दी, मैं दर–दर घूमता रहा।.....''–1

डॉ. शंकर शेष यह बताना चाहते हैं कि देश में युवा वर्ग पर बैरोजगारी का संकट मंडरा रहा है वे इसकी चपेट में हैं तथा युवा वर्ग इस समस्या से निकलना चाहता है।

एक समय था जब नौकरियों के लिए भटकना नहीं पड़ता था, लेकिन समय ने अब करवट ली है। कुछ समय पूर्व की बात है कि उत्तर प्रदेश राज्य सचिवालय में 368 पदों के लिये कुल 23 लाख से अधिक आवेदन आए, जिसमें उच्च शिक्षा प्राप्त, पी–एच.डी. से लेकर एम.बी.ए. व इंजीनियरिंग अभ्यर्थी शामिल थे। जबकि इस पद के लिए स्कूल शिक्षा की योग्यता थी। अभी हाल ही में श्रम मंत्रालय की इकाई श्रम ब्यूरो द्वारा एक सर्वेक्षण रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि– '' भारत में बैरोजगारी की दर 2013–14 में बढ़कर 4.9 फीसदी पहुंच गई है, जबकि 2012–13 में यह दर 4.7 फीसदी थी। रिपोर्ट के अनुसार, बैरोजगारी की दर देश में सबसे कम गुजरात में और सबसे अधिक केरल में है। अध्ययन के अनुसार गुजरात में 15 साल से अधिक उम्र के प्रति 1000 लोगों में 12 लोग बैरोजगार थे, जबकि कर्नाटक में यही संख्या 18, महाराष्ट्र में 28, म.प्र. में 29, तेलंगाना में 33, हरियाणा में 48, पंजाब में 58, राजस्थान में 65, हिमाचल प्रदेश में 75, जम्मू कश्मीर में 105, गोवा में 106, त्रिपुरा में 116 और केरल में 140 थी।''–2

बैरोजगारी देश की एक बडी समस्या है इसका कारण देश की आबादी बढ़ना है। इसी कारण देश में रोजगार की संभावनाओं में कमी आयी है। जिससे देश के योग्यवान, शिक्षित युवा, बैरोजगारी के संकट से जूझ रहे हैं, देश की यह गहरी समस्या है कि देश में अर्थव्यवस्था में बढ़ोत्तरी के बाद भी नौकरियों की संख्या में कमी आयी है। इसका कारण है निजी कंपनियों द्वारा कम लागत से कमाई की सोचना और मशीनों का प्रयोग करना। वहीं रोजगार की दरों में कमी आने का ऐसा कारण भी है। जिसमें हमारी युवा पीढ़ी शिक्षा तो प्राप्त कर लेती है और डिग्री भी उन्हें मिल जाती है, लेकिन रोजगार प्राप्त करने की समझ उन्हें प्राप्त नहीं हो पाती है। इस कारण एक अनाज–सौ बीमार वाली स्थिति से युवाओं को गुजरना पड़ता है।

शिक्षा ही युवाओं के आंतरिक एवं बाह्य विकास को निखारती है। शिक्षा से ही युवा रोजगार प्राप्त कर पाते हैं तथा इस रोजगार से ही उनके जीवन में सुख–शांति समृद्धि आती है। शिक्षा से ही युवा सदृढ़ जीवन प्राप्त करते हैं। इससे ही वह सहानुभूति, सहनशीलता, धैर्य, दया, क्षमा आदि आंतरिक गुणों की प्रतिष्ठा कर पाते हैं, लेकिन यहां यह प्रश्न ही बदल गया है। यहां शिक्षा व्यवस्था इन उद्देश्यों की पूर्ति में असमर्थ नजर आती है। वास्तव में शिक्षा से व्यक्ति की प्रतिभा निखरना चाहिए तथा विकास होना चाहिए, लेकिन नाटक के पात्र कृष्ण के लिए यह एक विपरीत स्थिति बनकर सामने आयी है।

डॉ. शंकर शेष का कहना है कि कॉलेजों को जगह–जगह बना दिए, तथा युवाओं को डिग्रियां भी देते जा रहे हैं, परन्तु उन्हें रोजगार देने में हम आज भी असमर्थ हैं जिससे एक बड़ी अनहोनी, युवा पीढ़ी में कुंठा, अवसाद, निराशा, हताशा इत्यादि की उभरकर सामने आयी है। इस समस्या से युवाओं में नैतिकता, विश्वास, कठोर मेहनत जैसे गुणों का अभाव होता जा रहा है। आज देश को आवश्यकता है युवाओं को योग्य एवं जिम्मेदार बनाने की। इसके लिए देश को युवाओं को रोजगार की राह दिखाना होगी। जिससे

युवाओं में जीवन के प्रति गंभीर दृष्टिकोण आ सके तथा वह नकारात्मकता से दूर हो सकें एवं अपने जीवन कर्त्तव्यों को समझ सके। कुल मिलाकर हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली की जरूरत है जिससे युवाओं का सर्वांगीण विकास हो सके तथा उन्हें रोजगार प्राप्त हो सके।

नौकरी के मामले में हमारा देश सही स्थिति में नहीं है, क्योंकि अगर नौकरी के लिए एक पद निकल भी जाए तो उस पद के लिए कई अभ्यर्थियों के आवेदन आते हैं और उनकी योग्यता चाही गई योग्यता से भी कहीं अधिक होती है और तो और आवेदन के समय वह यही सोचते हैं कि कुछ भी हो यह नौकरी उन्हें ही मिले, लेकिन यहां पर भी भांजा–भतीजावाद या रिश्वत के मामले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सामने आते हैं–

''..... किसी ने नौकरी न दी। मैं दर–दर घूमता रहा। हाथ पैर जोड़े पर मैं किसी सेठ..... साहूकार, आला अफसर का भांजा–भजीजा नहीं था।.....''–3

इससे स्पष्ट होता है कि कृष्ण ने नौंकरी के लिए भरपूर प्रयास किया, वह हर उस रास्ते को खोजता रहा, जहां उसे नौंकरी की उम्मीद थी, लेकिन योग्य होने पर भी उसे नौंकरी नहीं मिली, क्योंकि वह किसी धनवान व्यक्ति का रिश्तेदार नहीं था तथा उसकी पहचान किसी बड़े अधिकारी से नहीं थी और न ही वह किसी बड़े अधिकारी का भांजा–भतीजा था।

कुल मिलाकर डॉ. शंकर शेष यह कहना चाहते हैं कि आज नौंकरी के मामले में भी रिश्तेदारी जान–पहचान तथा धनवान लोगों का बोल–बाला है। इसी वजह से आज एक ईमानदार योग्य व्यक्ति को रोजगार पाने के लिए दर–दर भटकना पड़ रहा है। वहीं बेईमान व्यक्ति पैसों के दम पर तथा रिश्तेदारी की दम पर आसानी से नौंकरी हासिल कर रहे हैं। इस कारण योग्य, ईमानदार व्यक्ति को बैरोजगारी के संकट से गुजरना पड़ रहा है।

डॉ. शंकर शेष स्पष्ट करते हैं कि आज देश में भ्रष्टाचारी और असमानता के कारण ऐसी व्यवस्था का निर्माण हो गया है जहां कुलीनों के लिए तो रोजगार उपलब्ध है, लेकिन ईमानदार व्यक्ति आज भी खुले तौर पर बैरोजगारी के दंश को झेल रहा है। यह नौकरशाही की उदासीनता का ही नतीजा है कि आज ईमानदार, योग्य व्यक्तियों का एक बड़ा भाग पिछड़ता जा रहा है और बैरोजगारी का संकट झेलने को मजबूर है। इसका कारण है कि आज देश में भ्रष्टाचारी ने अपना दबाव बनाया है जिसमें आम आदमी दबा हुआ है। वह उन्नति से दूर है इससे बड़ी चिंता की बात यह है कि हमारा भ्रष्टाचार की व्यवस्था में परिवर्तन एवं सुधार के प्रति उदासीन एवं उपेक्षापूर्ण व्यवहार है।

देश में भ्रष्टाचार के चलते शिक्षा संस्थानों का प्रबंधन भी बड़ी दयनीय स्थिति में है। इन संस्थानों पर अधिकारियों ने अपना कब्जा जमाया है। व्यवस्था परिवर्तन के लिए अभिभावकों और विद्यार्थियों के हाथ में अधिकार कम ही हैं। आज के युग में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल कुलीन एवं अभिजात्य वर्ग के छात्रों तक ही सीमित रह गई है। बांकी शिक्षा व्यवस्था में भी ग्रामीण–शहरी और लिंग भेद की उपेक्षा बनी रहती है। खासकर सरकारी संस्थानों की स्थिति अत्यंत विचारनीय है। यहां पर पढ़ाने वाले प्रोफेसरों की अनुपस्थिति एवं लापरवाही को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वहीं यह अपनी गुणवत्ता एवं स्वप्रेरणा के अभाव को स्पष्ट रूप में प्रदर्शित करते हैं। आज आवश्यकता है तो छात्रों के लिए दीर्घकालीन पैसों के प्रबंध करने की। जिससे छात्र अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें। वहीं आवश्यकता है प्रतिस्पर्धी अनुदान की जिससे शोधार्थी को अपने शोध कार्य में समस्या न आए और समय के साथ वह शोध को पूरा कर सके।

डॉ. शंकर शेष ऐसी शिक्षण व्यवस्था के पक्ष में है जिससे विद्यार्थियों में जागरूकता आए। विद्यार्थी अपने परिवार, समाज, एवं राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी को समझ सकें। यही वह शिक्षा व्यवस्था होगी जो अपने देश की ज्ञानमयी, भूमि को पुनः उर्वर बनाएगी। तब ही देश में प्रतिभाशाली, विद्वान, कलाकार एवं राष्ट्रभक्तों का जन्म होगा।

भारत देश संसार में शिक्षा व ज्ञान का केन्द्र रहा है। यहीं से ज्ञान का उदय हुआ और समस्त विश्व में यह फैल गया। लेकिन आज देश में ज्ञान और शिक्षा का स्तर चिंताजनक स्थिति में है। विद्या ही जीवन में आंतरिक गुणों का विकास करती है। व्यवहार को मजबूती प्रदान करती है इस कारण ही इसे जीवन का उद्देश्य कहा जाता है, लेकिन आज देश की शिक्षा, दीन–हीन अवस्था में है जीवन में शिक्षा के महत्व से सारा संसार परिचित है। शिक्षा से ही व्यक्तित्व संवरता है यह हमें जीवन जीने का तरीका सिखाती है। अतः देश को शिक्षा व्यवस्था के स्तर को ऊंचा करने की आवश्यकता है जिससे रोजगार के अत्यधिक अवसर युवाओं को प्राप्त हो सकें।देश भी बैरोजगारी की समस्या का समाधान चाहता है। इस दिशा में कई कार्यक्रम भी संचालित किया जाते हैं जिससे बैरोजगारी की समस्या से निपटा जा सके। संचालित कार्यक्रमों में, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, समन्वित विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, मनरेगा आदि कार्यक्रम शामिल हैं, लेकिन देश में बैरोजगारी की बढ़ोत्तरी इस बात को प्रमाणित करती है कि बैरोजगारी के समाधानों में अभाव है। इस संबंध में सी.आई.आई. की इंडिया स्किल रिपोर्ट 2015 कहती है कि देश में प्रतिवर्ष सवा करोड़ शिक्षित युवा तैयार होते हैं एवं बैरोजगारी से निपटने के लिए सरकारी और प्रायवेट सभी क्षेत्रों में रोजगार के प्रयास करते हैं, परन्तु 37 फीसदी व्यक्तियों को ही रोजगार उपलब्ध हो पाता है। इसका एक कारण सरकारी क्षेत्र में नौंकरियों का कम होना है तो दूसरा कारण प्रायवेट क्षेत्र में दक्षता प्राप्त व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध होना है, परन्तु हमारे देश में 35 लाख व्यक्ति ही साल में कुशल प्रशिक्षण कर पाते हैं। देश ने 2022 तक 40 करोड़ व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने का उद्देश्य बनाया है, लेकिन नेशनल सैंपल सर्वे द्वारा किया गया सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी है कि इस लक्ष्य को पाना कठिन है।

यदि देश के रोजगार सृजन आकड़ों पर प्रकाश डाला जाए तो यह बात सामने आती है कि पिछले एक से डेढ़ दशक के बीच रोजगार सृजन की दर सिर्फ 1.4 प्रतिशत ही रही, जबकि इसी बीच पढ़े लिखे रोजगार इच्छुक युवाओं की संख्या सालाना 2.23 फीसदी बढ़ी है। जिससे स्पष्ट होता है कि देश में बैरोजगारी का संकट बढ़ता जा रहा है।

'नयी सभ्यता : नये नमूने' नाटक का पात्र कृष्ण भी बैरोजगारी के गहन अंधकार में फंस चुका है। कृष्ण को घर चलाना है तथा अपनी बहन शोभा का इलाज भी कराना है। इस समस्यॉ ने कृष्ण के आगे अब क्या करें का प्रश्न खड़ा कर दिया। इस बैरोजगारी की समस्या से परेशान होकर नाटक का पात्र कृष्ण बेईमानी के मार्ग से इस समस्या का समाधान करने की योजना तैयार करता है, योजना के अनुसार कृष्ण धनी व्यापारी की बेटी स्मृति और धरणी को अपने झूठे प्यार के जाल में फंसाता है और दोनों से रूपये ऐंठता है, लेकिन कृष्ण इस प्रकार के कार्य से संतुष्ट नहीं है। यह कार्य तो वह अपनी बहन शोभा का इलाज कराने के लिए कर रहा है। भले ही कृष्ण ने किसी से भी कितने रूपयों को ऐंठा हो फिर भी वह इसे गलत समझता है, क्योंकि कभी–कभी व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार की घटनाऐं देखी जा सकती हैं। जिसके लिए वह तैयार नहीं होता लेकिन वह कार्य उसे परिस्थितिवश करना पड़ता है। कृष्ण भी इस कार्य को स्वेच्छा से नहीं बल्कि परिस्थिति बस कर रहा है जिसे स्वयं कृष्ण प्रकट करता है। कृष्ण कहता है – ''मैं दुनिया की आंखों में धूल झोंकने में किसी प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव नहीं करता पर क्या करूं उधो! परिस्थिति का दास हूं।''–4

इस प्रकार कृष्ण ने यह कार्य परिस्थिति बस किया। जिससे कि वह अपनी बहन शोभा का इलाज करा सके। लेकिन जब स्मृति और धरणी को इस बात का पता चलता है कि कृष्ण हमसे प्रेम नहीं करता। वह तो हमें बेवकूफ बना रहा था तो वह इसका विरोध करती हैं। इधर भुलवू भी कृष्ण से अनैतिक तरीके से रूपये ऐंठने का विरोध करता है। यहीं से नाटक का मुख्य केन्द्र बिन्दु उभरकर सामने आता है। डॉ. शंकर शेष इसी बात को प्रकट करते हैं कि आखिर हमारे देश में बैरोजगारी की जड़ क्या है नाटककार के नाटक का उद्देश्य ही बैरोजगारी की जड़ से जन–जन को परिचय कराना है। इस जड़ को उभारते हुए नाटककार स्पष्ट शब्दों में यह कहना चाहता है कि देश में बैरोजगारी की जड़ है–अनैतिकता, भांजा–भतीजावाद।

यही तो मुख्य कारण है जिस पर नाटक टिका है। जिसे नाटककार ने कृष्ण के माध्यम से उभारा है। जब कृष्ण पर आरोप लगता है कि उसके द्वारा किया गया कार्य अनैतिक है तब कृष्ण सभी को समझाता है कि मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि क्या अनैतिक है, क्योंकि मैंने नैतिकता से नौकरी पाने का प्रयास किया, पर क्या हुआ मुझे नौकरी नहीं मिली। कृष्ण

भुलवू को नीति के नाम हो रहे छल को व्यक्त करता हुआ कहता है– ''कृष्ण : नीति का नाम मत लो भुलवू। इस शब्द से मुझे बेहद नफरत है। संसार में नैतिकता से बढ़कर मीठा छल नहीं। नैतिकता का थोथा आदर्श केवल शब्द जंजाल है..... दूसरों को उपदेश देने के लिए बहुत अच्छा साधन है गरीबों को चूसने का एक शस्त्र। और हां तुम्हारे पिता जब घी में मिलावट करते हैं, अनाज में कंकड़ मिलाते हैं तब कहां होती है ये नैतिकता। मेरे पिता को नौकरी से झूठे आरोप लगाकर हटाया गया तब कहां थी यह नैतिकता...... ?''–5

नाटककार डॉ. शंकर शेष इसी बात को मुख्य रूप से व्यक्त करना चाहते हैं कि कृष्ण को रोजगार न मिलने के पीछे अनैतिकता है। अनैतिकता का जाल हमारे देश में इस तरह से फैला हुआ है। जिसमें आज आम व्यक्ति फंसता ही जा रहा है। इसमें लिप्त व्यक्ति इस बात को भूल चुका है कि उसके इस अनैतिक मार्ग से योग्य और ईमानदार व्यक्तियों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है। यहां तक कि व्यक्ति अनैतिक तरह से धन कमाने में पीछे नहीं है। नाटककार कृष्ण के माध्यम से कहता है कि हमारे देश में लोग नैतिकता का ढ़ोंग करते हैं वह दिखाते हैं कि वह नैतिकता से काम कर रहे हैं तथा उसके पीछे वह गरीबों का शोषण करते हैं। उनका खून पीते हैं। व्यक्तियों को असली घी के नाम पर मिलावटी घी देते हैं। अनाज में कंकड़ मिलाते हैं यहां तक कि एक व्यक्ति को झूठे आरोप में फंसाकर उसे नौकरी से निकलवाते हैं। इस प्रकार हमारे देश में फैली अनैतिकता को डॉ. शंकर शेष चित्रित करते हैं। वह यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि आज व्यक्ति अनैतिकता के मार्ग पर उतर आया है। वह अनैतिक तरीके से पैसे कमाने लगा है। इसी अनैतिकता के चलते कृष्ण को नौकरी न मिल सकी। इस कारण कृष्ण ने अनैतिक मार्ग पर चलकर अपनी बहन शोभा का इलाज कराया। नाटक के अंत में कृष्ण की यह बात सुनकर सब कृष्ण के साथ जाने की बात कहते हैं। इस प्रकार डॉ. शंकर शेष हमारे देश में बढ़ रही अनैतिकता, भांजा–भतीजावाद, भ्रष्टाचार को उभारते हैं। यह भ्रष्टाचार आज हर क्षेत्र में अपने पैर पसारे है। सरकारी विभागों की स्थिति तो भ्रष्टाचार के मामले में काफी खतरे दायक है। इस संदर्भ में 6 जून 2017 के दैनिक भास्कर (समाचार पत्र) की ये पंक्तियां दृष्टव्य हैं– ''2016 में विभिन्न सरकारी विभागों के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायतों में 67 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। संसद में पेश एक रिपोर्ट के अनुसार 2016 में 49.847 शिकायतें मिलीं, जबकि 2015 में 29.838 शिकायतें थीं।''

प्रस्तुत रिपोर्ट प्रमाणित करती है कि देश में भ्रष्टाचार में बढ़ोत्तरी हुई है। इसी भ्रष्टाचार ने आज कृष्ण जैसे योग्य व्यक्ति को रोजगार से दूर रखा है।

डॉ. शंकर शेष कहना चाहते हैं कि यदि देश बैरोजगारी की समस्यॉ से वास्तव में उभरना चाहता है तो अपनी संपूर्ण शक्ति इस दिशा में लगाना पड़ेगी। जब तक समाज में जागृति उत्पन्न नहीं हो जाती, तब तक इस समस्यॉ में सुधार लाना असंभव है नाटककार ने कृष्ण के माध्यम से देश का ध्यान बैरोजगारी की समस्यॉ पर खींचा है, क्योंकि नाटककार का मानना है कि इस दिशा में प्रयास नही किया गया तो युवा वर्ग को दीन–हीन की स्थिति से गुजरना पडेगा। अतः देश को अभी से इस कार्य में जुट जाना चाहिए। नाटककार का विचार है कि हाथी अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए अधिक समय जरूर लेता है लेकिन एक बार खड़ा हो जाने के बाद उससे सरलता पूर्वक घुटने नहीं टिकवाए जा सकते।

डॉ. शंकर शेष एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। उनका प्रत्येक कथन ठोस तथ्यों और यथार्थ पर टिका होता था। वह बेवजह किसी समस्यॉ को नाटकों में चित्रित नहीं करते थे, उन्होंने बैरोजगारी की स्थिति से जूझते देश के युवाओं का अध्ययन किया और विश्लेषणात्मक वैज्ञानिक पद्धति अपनाते हुए बैरोजगारी की समस्या को अपने नाटक 'नयी सभ्यताः नये नमूने' में चित्रित किया। वे एक निर्भीक नाटककार थे तथा अपनी बात को तर्क के साथ लोगों के मन में बैठाते थे। वे एक गहरे अध्ययनशील व्यक्ति थे। बैरोजगारी के संबधं में उनके विचार व्यावहारिक थे। उन्होंने अपने नाटक 'नयी सभ्यता : नये नमूने' में भारतीय समाज की प्रमुख समस्या बैरोजगारी के विरूद्ध आवाज उठाई। जिससे देश में बढ़ रही बैरोजगारी की समस्या का समाधान हो सके

निष्कर्ष

बेरोजगारी की समस्या देश में घातक समस्या बनी हुई है हर वर्ष बड़ी संख्या में युवा इसकी चपेट में आ रहे हैं।

रोजगार न मिलने से तनाव तथा कुंठा का जीवन यापन करने पर मजबूर है। डॉ. शंकर शेष देश को इस समस्या से अवगत करा कर समाधान की ओर ध्यान चाहते है।

सन्दर्भ सूची

1. पृष्ठ कवर से डॉ. शंकर शेष और रत्नाकर मतकरी के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन
2. डॉ. शंकर शेष : समग्र नाटक खण्ड़– ııı
3. पृष्ठ, 35 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–3 / मार्च 2016
4. पृष्ठ, 426 शंकर शेष : समग्र नाटक खण्ड– ı
5. पृष्ठ, 35–36 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–3 / मार्च 2016
6. पृष्ठ, 39–40 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–12 / दिसम्बर 2016
7. पृष्ठ, 35–36 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–3 / मार्च 2016
8. पृष्ठ, 426 शंकर शेष : समग्र नाटक खण्ड– ı
9. पृष्ठ, 9 / 8 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–1 / जनवरी 2017
10. पृष्ठ, 35–36 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक–3 / मार्च 2017
11. पृष्ठ, 59 डॉ. शंकर शेष और रत्नाकर मतकरी के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन
12. पृष्ठ 426 शंकर शेष : समग्र नाटक खण्ड– ı
13. पृष्ठ 3 दैनिक भास्कर (समाचार पत्र) अंक– 20, भोपाल मंगलवार 6 जून 2017
14. पृष्ठ 10 स्वराज्य की दिशा